डैविड बोहरर/द व्हाइट हाउस

बढ़ते कदम

लॉरिंडा कीज़ लौंग

राष्ट्रपति जॉर्ज डब्ल्यू. बुश की इस वर्ष प्रतीक्षित भारत यात्रा किसी अमेरिकी राष्ट्रपति की पांचवीं राजकीय भारत यात्रा होगी। इस यात्रा का उद्देश्य पिछले पचास वर्षों के आपसी सहयोग और भारतीय तथा अमेरिकी नेताओं की मुलाकातों के परिणामस्वरूप विकसित हुए संबंधों को और सुदृढ़ बनाना है।

भारत की राजकीय यात्रा पर आने वाले पहले अमेरिकी राष्ट्रपति थे राष्ट्रपति ड्वाइट डी. आइजनहावर। वह 1959 में भारत आए। 19 दिन की 11 देशों की शांति यात्रा पर निकले आइजनहावर ने चार दिन भारत में बिताए। उस समय यह किसी अमेरिकी राष्ट्रपति द्वारा की गई सबसे लंबी यात्रा थी। पालम हवाई अड्डे से राष्ट्रपति भवन तक के उनके मोटर काफिले के रास्ते में खड़े 15 लाख लोग आनंदित थे और 'आइजनहावर जिंदाबाद' के नारे लगा रहे थे। आइजनहावर इसके जवाब में खुलकर मुस्करा रहे थे। इस अवसर पर पूरी नई दिल्ली को सजाने के लिए रोशनी की गई और 25,000 अमेरिकी झंडे शहरभर में लगे। उत्साहित लोग अपनी खुशी का इजहार करने सड़क पर आ गए और उन्होंने राष्ट्रपति आइजनहावर और प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू की कार की खिड़कियों से फूलमालाएं अंदर फेंकीं।

आइजनहावर का बचपन खेती-बाड़ी वाले इलाके में बीता। वह आगरा के पास के एक गांव में गए और किसान किरण सिंह और टीकम सिंह से मिले। राष्ट्रपति ने उन्हें लिखे अपने निजी संदेशों में कहा, ''मुझे पूरी आशा है और मैं प्रार्थना करता हूं कि आपके और लाखों अन्य किसानों के

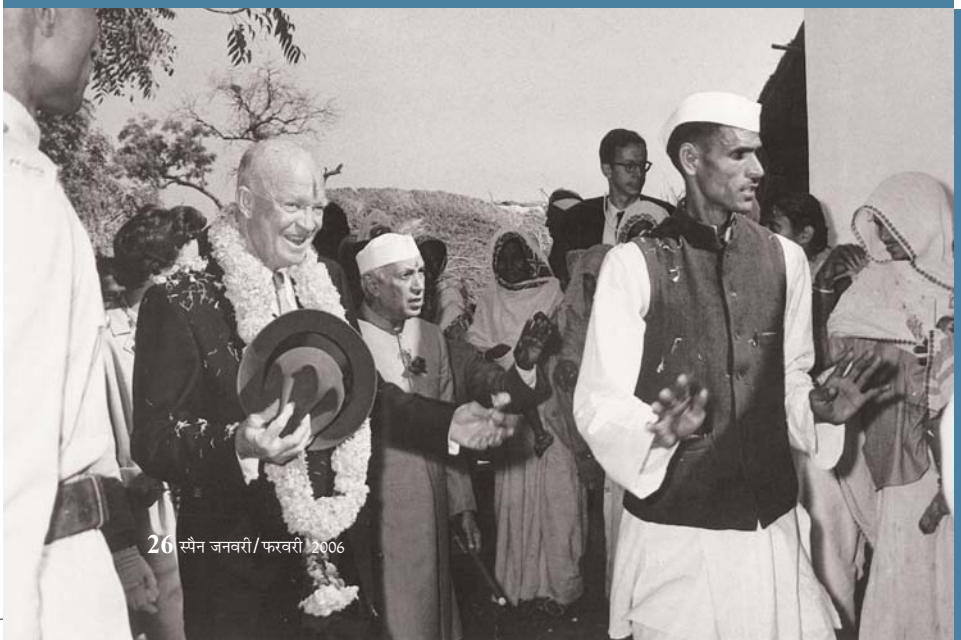

ऊपर: जुलाई 2005 में व्हाइट हाउस के लॉन में राष्ट्रपति जॉर्ज डब्ल्यू. बुश के साथ प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह

बाएं: दिसंबर 1959 में आगरा के पास एक गांव में राष्ट्रपति ड्वाइट डी. आइजनहावर और प्रधानमंत्री जवाहर लाल नेहरू (आइजनहावर के दाहिने)

दाएं: जुलाई 1969 में नई दिल्ली में राष्ट्रपति रिचर्ड एम. निक्सन कार्यवाहक राष्ट्रपति मोहम्मद हिदायतुल्ला के साथ।

बिल्कुल दाएं: मार्च 1966 में व्हाइट हाउस में राष्ट्रपति लिंडन बी. जॉनसन और प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी।

साभार: भारतीय दूतावास, वाशिंगटन डी.सी.

अक्टूबर 1949 में राष्ट्रपति हैरी एस. ट्रूमैन प्रधानमंत्री जवाहर लाल नेहरू का स्वागत करते हुए। उनके साथ विजय लक्ष्मी पंडित (बिल्कुल बाएं) और इंदिरा गांधी (बिल्कुल दाएं) दिखाई दे रही हैं।

नवंबर 1961 में व्हाइट हाउस के बगीचे में राष्ट्रपति जॉन एफ. केनेडी और प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू।

नवंबर 1971 में व्हाइट हाउस में राष्ट्रपति रिचर्ड एम. निक्सन और प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी।

मार्च 1962 में 'फर्स्ट लेडी' जेक्लीन केनेडी के साथ होली खेलते प्रधानमंत्री जवाहर लाल नेहरू।

© पी.पी. - सभार: डी.पी.

एन.आर. शा/ फोटो डिविजन, भारत सरकार

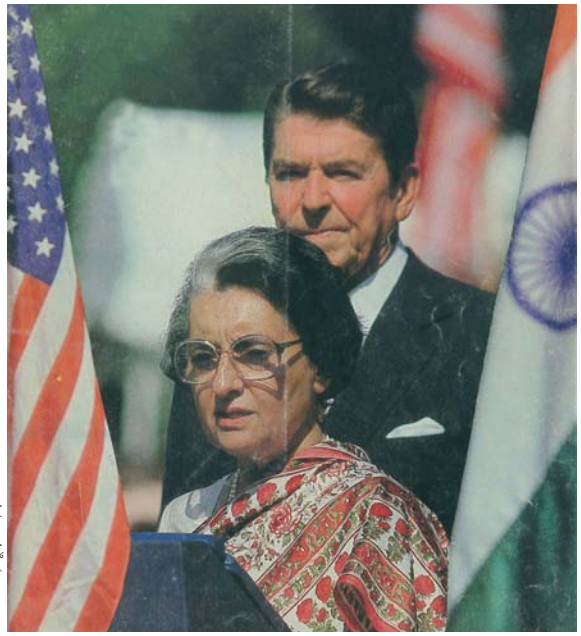

जॉन विकार्ट, यूएसआईए

बिल्कुल बाएं: जुलाई 1978 में व्हाइट हाउस में राष्ट्रपति जिमी कार्टर के साथ प्रधानमंत्री मोरार जी देसाई।

बाएं: जुलाई 1982 में व्हाइट हाउस में राष्ट्रपति रोनाल्ड रीगन के साथ प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी।

नीचे: फरवरी 1952 में अपनी नई दिल्ली की यात्रा दौरान पूर्व 'फर्स्ट लेडी' एलीनर रूजवेल्ट चरखे पर हाथ आजमाती हुईं।

प्रयासों के परिणामस्वरूप भारत में प्रगति और समृद्धि आए।''

दिल्ली के रामलीला मैदान में उस समय के हिसाब से जमा सबसे ज्यादा लोगों के हुजूम को संबोधित करते हुए राष्ट्रपति आइजनहावर ने कहा, ''इस भव्य दृश्य को मैं अमेरिका और उन मुद्दों के लिए जिनके प्रति भारत-अमेरिका प्रतिबद्ध हैं, भारत के पांच लाख लोगों द्वारा दिया गया आत्मा को छूने वाला सबूत मानता हूं। स्वतंत्रता के साथ शांति और दोस्ती... हम लोग जो स्वतंत्र हैं और ईश्वर और प्रकृति के सभी वरदानों से बढ़कर अपनी स्वतंत्रता को चाहते हैं, हमारे बीच परिचय और अधिक प्रगाढ़ होना चाहिए, हमें एक-दूसरे पर और अधिक विश्वास होना चाहिए, हमें एक-दूसरे की सहायता करनी चाहिए।''

प्रधानमंत्री नेहरू ने कहा कि राष्ट्रपति आइजनहावर की यात्रा के 110 घंटों के दौरान, ''एक अविस्मरणीय घटना घटी जिसे हमारे युग के इतिहास में दर्ज किया जाएगा।.....दो महान देशों ने अपने दिल और दिमाग के एक-दूसरे के लिए खोले।''

इस शुरूआत ने अगले दशकों में संबंधों की नींव तैयार की। महत्वपूर्ण अंतर्राष्ट्रीय मुद्दों पर गंभीर मतभेद उभरने और कभी-कभी तो युद्ध काल में दोनों देशों के एक-दूसरे के विरोधियों के साथ खड़े

© पी. पैकरडैक्स-पी.ए.

दिखने के बावजूद लोकतंत्र, मानवाधिकारों और कानून के राज के प्रति साझी प्रतिबद्धता दोनों देशों को धीरे-धीरे एक नजदीकी और बहुमूल्य मैत्री की ओर ले आई है।

सात भारतीय प्रधानमंत्री अमेरिका की राजकीय यात्रा पर गए हैं। खुली चर्चा और आपसी समझदारी में प्रगति हर मुलाकात की खासियत रही। इस प्रक्रिया की परिणति पिछले साल जुलाई में प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह की राजकीय यात्रा में हुई जब उन्होंने अमेरिकी कांग्रेस को संबोधित किया और राष्ट्रपति जॉर्ज बुश के साथ मिलकर सकंल्प लिया कि भारत और अमेरिका रक्षा, आतंकवाद से लड़ाई, स्वच्छ ऊर्जा आपूर्ति के विकास, असैन्य परमाणु ऊर्जा, अंतरिक्ष अनुसंधान, आपदा राहत, कृषि विकास, लोकतंत्र, मानवीय विकास, अधिक मुक्त व्यापार, आर्थिक अवसरों और एच.आई.वी./एड्स के विरुद्ध संघर्ष में सहयोग पर आधारित एक वैश्विक साझेदारी तैयार करेंगे।

प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह के साथ व्हाइट हाऊस में एक पत्रकार सम्मेलन को सम्बोधित करते हुए राष्ट्रपति बुश ने कहा,''हमारे साझे मूल्यों के कारण आज दोनों देशों के संबंध बेहद मजबूत हैं। हम अपने देशों को अधिक सुरक्षित बनाने, अपने नागरिकों को बेहतर जीवन उपलब्ध कराने और संसार भर में शांति और स्वतंत्रता के प्रसार के लिए मिलकर काम कर रहे हैं।''

अमेरिका की पहली राजकीय यात्रा प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू ने की थी। 1949 में वह व्हाइट हाऊस में राष्ट्रपति हैरी एस. ट्रूमैन से मिले थे। तब नेहरू की मुलाकात आइजनहावर से भी हुई थी जो उन दिनों कोलंबिया विश्वविद्यालय के प्रेसीडेंट थे। कोलंबिया विश्वविद्यालय ने भारतीय प्रधानमंत्री को डॉक्टर ऑफ लॉ की उपाधि से नवाजा था। वर्ष 1956 में नेहरू दोबारा अमेरिका गए और राष्ट्रपति आइजनहावर से मिले। उन्होंने उनके फार्म को देखा और रेडियो पर अमेरिकियों को संबोधित किया। उन्होंने कहा, ''कोई भी भारतीय यह नहीं भूल सकता कि स्वतंत्रता के लिए हमारे संघर्ष के दौरान आपके देश से हमें पूरी सहानुभूति और समर्थन मिला। नेहरू राष्ट्रपति फ्रैंकलिन डिलानो रूजवेल्ट की विधवा एलीनर रूजवेल्ट से भी मिले। 1952 में जब वह भारत आईं तो उनकी मेजबानी की।

दस साल बाद जैकलिन केनेडी किसी पदासीन राष्ट्रपति की पत्नी के तौर पर भारत आने वाली पहली फर्स्ट लेडी थीं। मार्च 1995 में भारत की यात्रा पर अपने पति का प्रतिनिधित्व करने वाल एकमात्र दूसरी फर्स्ट लेडी थीं हिलैरी रोडहम क्लिंटन।

मेरी एन फैंकलमैन/ द व्हाइट हाउस

बाएं से: जून 1985 में वाशिंगटन में राष्ट्रपति रोनाल्ड रीगन, 'फर्स्ट लेडी' नैंसी रीगन, सोनिया गांधी और प्रधानमंत्री राजीव गांधी।

श्रीमती केनेडी अपनी बहन प्रिंसेस ली रैड्जीविल के साथ प्रधानमंत्री नेहरू और उनकी बेटी इंदिरा गांधी के घर पर रहीं। उन्होंने बगीचे में हिमालयी पांडाओं को बांस का अंकुरित हिस्सा खिलाया और राष्ट्रपति राजेन्द्र प्रसाद के अंगरक्षकों के घोड़े पर सवारी की। वे हस्तशिल्पियों से मिलीं, अमेरिकी चित्र और संगीत के रिकॉर्ड दान में दिए। वह अस्पताल में भर्ती बीमार बच्चों के लिए अमेरिकी मिठाइयों का एक थैला भी लाईं और उन्हें हंसाया। वर्ष 1961 में प्रधानमंत्री नेहरू और श्रीमती गांधी वाशिंगटन गए थे, उसके बाद श्रीमती केनेडी की यह यात्रा हुई।

अगले ही महीने श्रीमती गांधी अपने पिता की प्रतिनिधि के रूप में राष्ट्रपति कैनेडी से मिलीं। उन्हीं दिनों राष्ट्रपति केनेडी ने वह घोषणाएं की जो भारतीय अमेरिकी आर्थिक सहयोग के 11 वर्षों के इतिहास में एक महत्वपूर्ण मोड़ बनीं। जल विद्युत और ताप विद्युत स्टेशनों के लिए तीन ऋण, बेहद आवश्यक औद्योगिक सामग्री और उर्वरकों के आयात के लिए ऋण और निजी उद्यमों को कर्ज उपलब्ध कराने वाले इंडस्ट्रियल फाइनेंस कॉपोरेशन ऑफ इंडिया को दो करोड़ डॉलर का ऋण।

श्रीमती गांधी अपने पिता की अमेरिका यात्राओं में उनके साथ जाती थीं। राष्ट्रपति लिंडन बी. जॉनसन के निमंत्रण पर प्रधानमंत्री के तौर पर मार्च 1966 में वाशिंगटन की अपनी पहली यात्रा के दौरान उन्होंने कहा, ''भारत और अमेरिका एक-दूसरे की उपेक्षा नहीं कर सकते, न ही उन्हें ऐसा करना चाहिए। साझे आदर्शों के प्रति प्रतिबद्धता रखने वाले मित्रों के रूप में वे संसार को एक बेहतर जगह बना सकते हैं....भारत अमेरिका के लिए उतना ही महत्वपूर्ण है जितना अमेरिका भारत के लिए है।'' राष्ट्रपति जॉनसन ने श्रीमती गांधी का जिक्र करते हुए कहा, ''वह दूसरे की बात समझने वाले दिल वाली स्त्री हैं.... वह ऐसी नेता हैं जिनमें अनूठी दृष्टि है।''

वर्ष 1969 में अपोलो 11 के चंद्रमा पर उतरने के बाद एशिया की यात्रा के दौरान राष्ट्रपति निक्सन ने दिल्ली में मजेदार 23 घंटे बिताए। खुली कार में

खड़े होकर दोनों हाथ हिलाकर वह अपना स्वागत करती भीड़ का अभिवादन करते। निक्सन का काफिला नई दिल्ली के चौराहों से गुजर रहा था तो वह तीन बार कूद कर नीचे उतरे और लोगों से गर्मजोशी से हाथ मिलाए। प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी की मौजूदगी वाले एक राजकीय भोज में राष्ट्रपति निक्सन ने कहा, ''शांति के लक्ष्य को प्राप्त करने के प्रयास का अर्थ है स्थिरता के एक ऐसे ढांचे का निर्माण जिसके अंदर हर देश के अधिकारों का सम्मान बना रहे।'' उन्होंने कहा कि अमेरिका भारतीयों और उनके पड़ोसी एशियाइयों के अपने ही ढंग से अपनी नियति का निर्माण करने और सुरक्षा के निश्चय का सम्मान करता है जिसमें राष्ट्रीय स्वतंत्रता पर जोर देने के बावजूद राष्ट्रों की एक-दूसरे पर निर्भरता को स्वीकार किया जाए।'' वर्ष 1971 में प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी ने राष्ट्रपति निक्सन से व्हाइट हाउस में मुलाकात की।

सात साल बाद जनवरी 1978 में राष्ट्रपति जिमी कार्टर और प्रधानमंत्री मोरारजी देसाई ने दिल्ली घोषणापत्र पर हस्ताक्षर किए। घोषणापत्र में कहा गया, ''अगर हम अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर शांति चाहते हैं तो देशों के बीच मौजूद आर्थिक असमानताओं को खत्म किया जाना चाहिए और अधिक समानतापूर्ण अंतर्राष्ट्रीय आर्थिक व्यवस्था की रचना की जानी चाहिए।'' इसने, ''हर देश के लोगों के अपने ही तरह की सरकार तय करने और अपनी राजनीतिक, सामाजिक और आर्थिक नीतियां तय करने के हर राष्ट्र के अधिकार'' को स्वीकार किया और युद्ध तथा आणविक एवं परंपरागत हथियरों के जखीरे जमा करने का विरोध किया। राष्ट्रपति कार्टर और उनकी पत्नी रोजालिन जहां भी गए, मुस्कुराते, हाथ मिलाते, फूल भेंट करते लोगों की भीड़ उन्हें घेर लेती। नई दिल्ली से 30 किलोमीटर दूर स्थित दौलतपुर गांव में भी यही नजारा था जिसका नाम ही कार्टरपुरी रख दिया गया। भरपूर कृषि उत्पादकता राष्ट्रपति कार्टर और प्रधानमंत्री मोरारजी देसाई का साझा सपना था। जून 1978 में अपनी अमेरिकी यात्रा के दौरान देसाई नेब्रास्का का एक सॉयबीन फार्म देखने गए।

जुलाई 1982 में प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी जब राष्ट्रपति रोनाल्ड रीगन से मिलीं तब तक साफ दिखने लगा था कि दोनों देशों ने मुश्किल समय पार कर लिया है। श्रीमती गांधी ने अपनी यात्रा को आपसी समझदारी और मैत्री की तलाश का एक साहसिक अभियान बताते हुए स्पष्ट किया, ''दो देशों का दृष्टिकोण कभी भी एक सा नहीं हो सकता लेकिन दोनों ही दूसरे के दृष्टिकोण को समझने का प्रयास कर सकते हैं। हमें एक छोटा ही सही लेकिन ऐसा साझा क्षेत्र ढूंढने का प्रयास करना चाहिए जिस पर सहयोग शुरू हो और उसे बढ़ाया जा सके।'' राष्ट्रपति रीगन का प्रत्युत्तर था, ''हम मानते हैं कि हमारे देशों के बीच मतभेद रहे हैं लेकिन इनके कारण हमारे साझा मसलों की अनदेखी नहीं होनी चाहिए। अपने राष्ट्रीय हितों को लेकर अपने ही बोध से संचालित हम दोनों ही मजबूत, गौरव से भरे, स्वतंत्र देश हैं।''

प्रधानमंत्री राजीव गांधी और राष्ट्रपति रीगन 1985 में वाशिंगटन में मिले और अक्टूबर 1987 में और घनिष्ठ सहयोग के एक महत्वाकांक्षी कार्यक्रम को तैयार करके उन्होंने दोनों देशों की मैत्री को एक बार फिर प्रमाणित किया। दो साल में उनकी मुलाकातों के बीच द्विपक्षीय व्यापार बढ़ा था और निजी क्षेत्रों के बीच सहयोग अधिक सघन हुआ।

राष्ट्रपति रीगन ने कहा, ''हमारे बीच रक्षा उत्पादन के क्षेत्र में अच्छा सहयोग रहा, खासतौर पर हल्के भारतीय युद्धक विमानों के मामले में। प्रौद्योगिकी के हस्तांतरण पर एक सहमति पत्र को लागू कर दिया गया है और अमेरिका भारत के उपग्रहों को अंतरिक्ष में पंहुचाने की दिशा में सक्रिय है। सांस्कृतिक, शैक्षिक और वैज्ञानिक सहयोग के लिए यूएस-इंडिया फंड की स्थापना कर दी गई है और आंतकवाद से मुकाबले के लिए हम मिलकर काम कर रहे हैं।''

उस समय तक सोवियत संघ सही-सलामत था। पूर्व-पश्चिम संबध तनावपूर्ण थे और भारत आर्थिक रूप से कुछ अलग-थलग था। वर्ष 2004 में पूर्व राष्ट्रपति की मृत्यु के बाद अमेरिकी राजदूत डैविड सी. मल्फोर्ड ने रीगन के बारे में कहा, ''शीत युद्ध के कारण वर्षो तक बने रहे खीझ भरे माहौल को आड़े आने दिए बिना रोनाल्ड रीगन ने प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी और प्रधानमंत्री राजीव गांधी से दोस्ताना और फलदायक

राष्ट्रपति दिवस

अमेरिकी लोग पारंपरिक रूप से फरवरी में दो राष्ट्रीय अवकाश रखते थे। इनमें से एक राष्ट्रपति अब्राहम लिंकन की जयंती (जन्म दिन: 12 फरवरी 1809) पर और दूसरा अमेरिका के पहले राष्ट्रपति जॉर्ज वाशिंगटन की जयंती (जन्म दिन: 22 फरवरी 1732) पर। राष्ट्रपति रिचर्ड निक्सन ने 1971 में इसे बदलकर एक संघीय अवकाश घोषित कर दिया जिसे राष्ट्रपति दिवस के नाम से जाना जाता है। इसे सभी पूर्व राष्ट्रपतियों के सम्मान में फरवरी के तीसरे सोमवार के दिन मनाया जाता है।

संबध बनाए जिससे हमारे देशों के बीच विस्तृत सहयोग और व्यापार के नए अवसर बने। उन्होंने विज्ञान और प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में भारत-अमेरिका सहयोग की मजबूत नींव डाली-ऐसी रणनीतिज्ञ, भविष्यदर्शी दृष्टि इस व्यक्ति की खासियत थी।''

वर्ष 1994 में प्रधानमंत्री पी. वी. नरसिंह राव की वाशिंगटन में राष्ट्रपति बिल किल्टन से मुलाकात होने और न्यूयॉर्क, बोस्टन और ह्यूस्टन की यात्रा तक काफी महत्वपूर्ण बदलाव आ चुके थे। अमेरिकी प्रशासन शीत युद्ध के बाद अमेरिकी सेना का आकार कम कर रहा था (इस कदम का भारत ने स्वागत किया) और भारत को अमेरिकी निर्यात के दस सबसे महत्वपूर्ण उभरते बाजारों मे से एक के रूप में पहचाना गया। दोनों देशों ने शांति अभियानों में सफलतापूर्वक सहयोग किया था। राष्ट्रपति क्लिंटन ने कहा, ''मुझे लगता है कि हमारी साझेदारी अब बेहतर और अधिक गहरी होगी और मैं इसे आगे ले जाने को उत्सुक हूं।'' हार्वर्ड विश्वविद्यालय में अपने अभिभाषण में राव ने बढ़ती मैत्री की राह में ''शीत युद्ध की मनोवृति'' को आड़े न आने देने की बात कही। उन्होंने कहा, ''यह एक निर्णायक अवसर है और इसे चूकने में हमारा ही नुकसान है।''

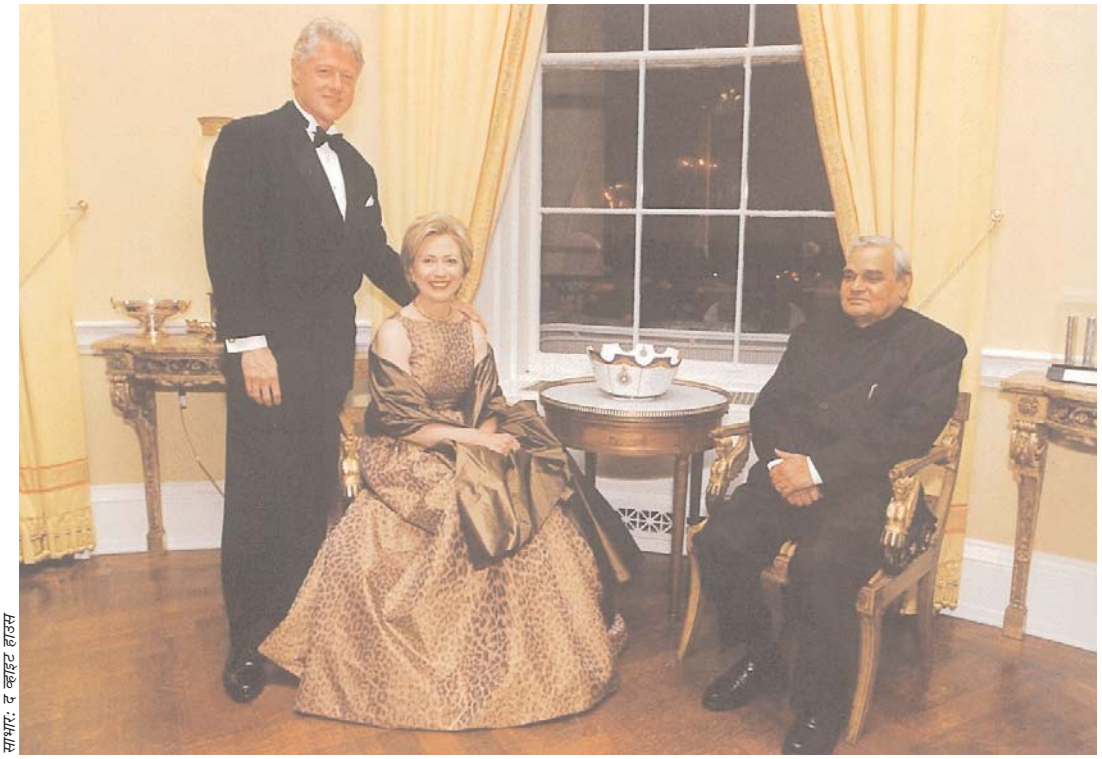

साभार: द व्हाइट हाउस

राष्ट्रपति क्लिटंन की अगली भारत यात्रा मार्च 2000 में संभव हो पाई जिसने संबंधों को नई दिशा में बढ़ाने का काम किया। इससे पहले परमाणु परीक्षण को लेकर भारत के अमेरिका से गंभीर मतभेद हो चुके थे और अमेरिका ने भारत पर आर्थिक प्रतिबंध लगाए थे। क्लिटंन ने भारतीय संसद को संबोधित किया, अपनी बेटी चैल्सी के साथ देशभर में भारतीय मेहमाननवाजी का आनंद उठाया और नए दोस्त बनाए। राष्ट्रपति क्लिटंन और प्रधानमंत्री अटल बिहारी बाजपेयी ने एक दृष्टि मसौदे पर हस्ताक्षर किए और स्वीकार किया कि ऐसे दौर भी गुजरे हैं जब ''हमारे संबध राह भटक गए लेकिन हम दोनों देशों के बीच करीबी और गुणात्मक रूप से नया संबध बनाने का निश्चय कर रहे हैं। हम अनेक परंपराओं और धार्मिक मतों के गठन से बने देश हैं और वर्षों से सिद्ध करते आ रहे हैं कि विविधता ही हमारी शक्ति है। नई सदी में भारत और अमेरिका शांति की दिशा में सहयोगी होंगे और क्षेत्रीय तथा अंतर्राष्ट्रीय सुरक्षा सुनिश्चत करने में उनका साझा हित और पूरक जिम्मेदारी होगी।''

कुछ महीने बाद प्रधानमंत्री वाजपेयी ने अमेरिकी कांग्रेस को संबोधित किया। जल्दी-जल्दी हुई ये यात्राएं सकारात्मक कदम थीं ।

तत्कालीन अमेरिकी राजदूत रिचर्ड सेलेस्टे ने स्पैन में एक लेख में लिखा था,''लोग मुझसे पूछते हैं कि भारत-अमेरिकी संबधों का यह नया अध्याय क्या नए अमेरिकी प्रशासन के बाद भी जारी रहेगा? मैं मानता हूँ कि इसका उत्तर जोरदार हां ही है।'' □

जे. स्कॉट एपलव्हाइट © ए. पी. - डब्ल्यू. डब्ल्यू. पी.

ऊपर: सितंबर 2000 में व्हाइट हाउस में राष्ट्रपति बिल क्लिंटन, 'फर्स्ट लेडी' हिलैरी क्लिंटन और प्रधानमंत्री अटलबिहारी वाजपेयी।

बाएं: राष्ट्रपति बिल क्लिंटन मार्च 2000 में राजस्थान के नायला में।

बिल्कुल बाएं: राष्ट्रपति जिमी कार्टर और 'फर्स्ट लेडी' रोजालिन कार्टर जनवरी 1978 में हरियाणा के दौलतपुर में।